प्रतिरोधी टीबी का नया इलाज सस्ता और आसान

बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी एक व्यापक समस्या बन गई है। प्रति वर्ष करीब 4 लाख 80 हज़ार लोगों को ऐसी प्रतिरोधी टीबी होती है मगर इनमें से मात्र चौथाई लोगों की ही पहचान हो पाती है और उनमें से मात्र 50 प्रतिशत का ही इलाज हो पाता है।

इलाज न हो पाने का प्रमुख कारण यह है कि यह इलाज बहुत लंबा चलता है और इसमें कई दवा-इंजेक्शनों का इस्तेमाल होता है। इसके अलावा, इस इलाज के साइड प्रभाव भी होते हैं। साइड प्रभावों में श्रवण शक्ति का ह्रास और लीवर को नुकसान शामिल हैं। इलाज के अंतर्गत मरीज़ को दो साल तक दर्ज़न भर एंटीबायोटिक औषधियों का सेवन करना पड़ता है और आठ महीनों तक प्रतिदिन एक इंजेक्शन लगवाना पड़ता है।

मगर अब अफ्रीका और उज़बेकिस्तान में किए गए परीक्षणों ने उम्मीद जगाई है कि इसका ज़्यादा आसान इलाज संभव है जो सस्ता भी पड़ेगा। इस नए उपचार में कई सारी तो पुरानी दवाइयां ही हैं मगर यह मात्र 9 महीने चलता है। 507 लोगों पर किए गए प्रारंभिक परीक्षण से पता चला है कि इस उपचार क्रम की सफलता की दर 80 प्रतिशत है। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय टीबी विरोधी संगठन के अरनॉड ट्रेबुक ने बताया कि इसके साइड प्रभाव भी कम होते हैं क्योंकि उपचार की अवधि मात्र 9 माह होती है। ये परिणाम नौ अफ्रीकी देशों में किए गए परिणामों पर आधारित हैं। ट्रेबुक ने विश्व फेफड़ा रोग सम्मेलन में यह भी घोषणा की कि उन्हें ऐसे परिणाम अन्य देशों से भी प्राप्त हुए हैं।

मेडिसिन्स सान्स फ्रंटियर्स (सरहदों से मुक्त डॉक्टर्स) संस्था के एस्थर केसास ने उज़बेकिस्तान और स्वाज़ीलैंड के परीक्षणों के परिणाम प्रस्तुत करके बताया कि नए उपचार क्रम की लागत पहले के उपचार से कम के कम तीस प्रतिशत कम है। अलबत्ता, टीबी एलाएंस नामक संस्था के स्टीफन मरे का मत है कि ये परिणाम आशाजनक तो हैं मगर अभी हमें ऐसे परिणामों की प्रतीक्षा है जो तुलनात्मक हों - जिनमें पुराने और नए उपचार क्रमों की तुलना की जाए। तभी पक्के तौर पर कहा जा सकेगा कि नया उपचार क्रम वाकई बेहतर है। इस तरह के विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन की तैयारियां शुरू भी हो गई हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***